कर्म, भाग्य एवं पुनर्जन्म

डॉ. सी.पी. कुमार
वैज्ञानिक ई-1
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

हिन्दू मान्यता में कर्म सिद्धान्त को विशेष महत्ता दी गई है। इसके अनुसार कुछ भी संयोगवश घटित नहीं होता है बल्कि प्रत्येक घटना एक सुनियोजित व्यवस्था के अनुसार घटित होती है । कर्म सिद्धान्त एक सरल अवधारणा है - मनुष्य जैसे कर्म करता है उसी के अनुसार उसे फल की प्राप्ति होती है । प्रत्येक कार्य का परिणाम अवश्य होता है । कोई भी ऐसा कार्य नहीं होता जो किसी परिणाम के बिना रह सके ।

हमारा प्रत्येक भौतिक कार्य एक कर्म है । हमारी वाणी और शब्द कर्म हैं । यहाँ तक कि हमारे मन में उठने वाले विचार भी कर्म हैं । वास्तव में प्रत्येक विचार, शब्द एवं कार्य एक उचित प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं जिसे सनातन न्याय के तराजू पर तौला जाता है । कोई भी मनुष्य कर्मो के चंगुल से भाग नहीं सकता । गीता में भगवान श्री कृष्ण के अनुसार, भगवान का अवतार भी बिना कार्य के संभव नहीं है । कोई भी किया गया कार्य जन्म एवं मृत्यु के कार्मिक चक्र में उचित समय पर उचित प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है । यह संभव है कि हम अपने सभी कर्मो का परिणाम इसी जन्म में प्राप्त न कर सकें ।

हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार, सिर्फ मनुष्य का शरीर मरता है शरीर के अन्दर स्थित आत्मा कभी नहीं मरती। लेकिन आत्मा का मृत्यु के पश्चात पथ मनुष्य के पिछले कर्मो के आधार पर निर्धारित होता है । हालांकि वैज्ञानिक

दृष्टिकोण के अनुसार कर्म सिद्धान्त को सत्यापित नहीं किया जा सकता। लेकिन हम अपने आसपास की असमानतायें देखने का प्रयत्न करें । एक शिशु इथोपिया के सूखे रेगिस्तान में पैदा होता है तथा दूसरा शिशु बेवर्ली हिल्स के विलासमय वातावरण में जन्म लेता है । दोनों ही निष्कपट शिशु हैं लेकिन एक अपर्याप्त पोषण से मर जाता है तथा दूसरा विलासमय जीवन व्यतीत करता है । क्या इसे हम कर्म सिद्धान्त के अतिरिक्त अन्य किसी व्याख्या से स्पष्ट कर सकते हैं?

स्वयं भगवान भी कर्म सिद्धान्त से बंधे हैं । उदाहरण के रूप में जब भगवान ने श्री राम के रूप में अवतार लिया तब उन्होंने एक वानर राज को छल से मारा। लेकिन जब भगवान ने श्री कृष्ण के रूप में अवतार लिया तब उन्हें उसी वानर द्वारा एक शिकारी के रूप में मारा गया । जीसस क्राइस्ट ने अपने भक्तों के कार्मिक ऋण को उतारने के लिए अपना जीवन क्रास पर समर्पित कर दिया । जब कभी उन्होंने दूसरों को रोग से मुक्ति प्रदान की अथवा जीवन रक्षा की , उन्होंने दूसरों के कार्मिक ऋण को अपने ऊपर ग्रहण किया । भारत में कई संतों ने, जैसे कि श्री रामकृष्ण परमहंस, दूसरों के कार्मिक ऋण को खुद स्वीकार किया । श्री रामकृष्ण परमहंस की कैंसर द्वारा दर्दनाक मृत्यु हुई ।

हम अपनी इच्छा से दूसरों के कार्मिक ऋण को स्वयं को हस्तान्तरित कर सकते हैं जैसा कि जीसस क्राइस्ट एवं श्री रामकृष्ण परमहंस ने किया । यदि आप किसी पर स्वार्थवश आक्रमण करते हैं तो उसके कुछ कार्मिक ऋण स्वतः ही आप को हस्तान्तरित हो जाते हैं । किसी को सुधारने की नियत से किये गये कर्म इस श्रेणी में नहीं आते लेकिन दुर्भावना एवं स्वार्थवश किये गये अनुचित कार्यो द्वारा उसके कार्मिक ऋण आप को हस्तान्तरित हो जाते हैं । जब एक मनुष्य की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा का आगामी पथ उस मनुष्य के अच्छे

एवं बुरे कर्मो के योग द्वारा निर्धारित होता है । यदि कर्मो का योग अच्छा है तो वह एक अच्छा भावी जीवन प्राप्त करता है । यदि कर्मो का योग बुरा है तो उसे एक बुरे जीवन की प्राप्ति होती है । सिर्फ एक या दो अच्छे / बुरे कार्य आत्मा के लक्ष्य को निर्धारित नहीं कर सकते ।

यदि किसी माता-पिता के यहाँ एक बीमार बालक जन्म लेता है तो क्या हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इसके लिए माता-पिता एवं बालक दोनों ही जिम्मेदार हैं ? कर्म सिद्धान्त के अनुसार , पिछले कर्मो के कारण, माता-पिता का भाग्य यह निर्धारित हुआ कि वे अपने बच्चे की चिन्ता करते रहें एवं बालक का भाग्य यह निर्धारित हुआ कि वह बीमारी के साथ जन्म ले । वास्तव में माता-पिता एवं बालक दोनों अपने आगामी अच्छे कर्मो द्वारा अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। कर्म सिद्धान्त का उद्देश्य किसी की भर्त्सना करना नहीं अपितु एक आशा का संचार करना है ।

अब प्रश्न यह उठता है कि दयालु भगवान ने पुनर्जन्म की दर्दनाक प्रक्रिया का संचालन क्यों किया । यह प्रश्न कुछ ऐसा ही है कि भगवान ने ईडन के बाग में निषेधात्मक फल को रखा ही क्यों ? हिन्दू ग्रन्थों में इस प्रश्न की उचित व्याख्या नहीं मिलती है । शास्त्रो के अनुसार , हमारी समस्या यही है कि हम सब माया के इन्द्रजाल में फंसे हैं । हिन्दू इस माया के कारण हम अपनी वास्तविक प्रकृति को भूल चुके हैं कि हम एक आत्मा हैं। हमारी समस्याओं का समाधान सिर्फ सच्चे ज्ञान की अनुभूति होना है ।

हिन्दू धर्म के अनुसार हम जैसा कार्य करते हैं उसी के अनुरूप उसका निर्णय होता है । अच्छे एवं बुरे कर्मो का निष्कर्ष उनके योगात्मक रूप में

संपादित होता है तब हमें क्या करना चाहिए? अपने अन्तर्मन में झांकने का प्रयत्न करें । सिर्फ ध्यान (मेडिटेशन) की प्रक्रिया द्वारा ही हम सत्य की अनुभूति कर सकते हैं । श्री कृष्ण ने सब कुछ नहीं बताया, श्री बुद्ध ने सब कुछ नहीं बताया, ईसा मसीह ने सब कुछ नहीं बताया - क्यों ? क्योकि सूक्ष्म सत्य इस मन एवं दिमाग से बहुत ऊपर है । इस पृथ्वी की कोई भाषा उसका वर्णन नहीं कर सकती । जो जानता है वह बोलता नहीं और जो बोलता है वह जानता नहीं ।

प्रकृति द्वारा दिया गया यह जीवन एक महान आशीर्वाद है । कृपया इसे व्यर्थ न जाने दें । आइये हब सब मिलकर एक दूसरे के कल्याण के लिये सिर्फ अच्छे कर्म करने का संकल्प लें ।